न्यायालय भू प्रबन्ध अधिकारी एवं पदेन राजस्व अपील प्राधिकारी, कोटा

आज्ञा – पत्र

उनवान ...... सुमित ...... बनाम ...... दिलखुश ......

किस्म मुकदमा ...... धारा - 225 (भू.रा.अ.) ...... अपील संख्या ...... 2025/358) ......

अभिभाषक अपीलांट ...... श्री सुहाना राठौर ...... अभिभाषक रेस्पोडेंट ......

तारीख हुक्म	हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तामील में जारी हुए
15.5.26	पत्रावली पेश हुई। अभि. अपीलांट एवं अपीलांट को रुक-रुक कर तीन-तीन बार आवाजें लगवायी गयी, फिर भी उनकी ओर से कोई भी उपस्थित नहीं हुआ। हमने पत्रावली का अवलोकन किया। अभि. अपीलांट द्वारा रेस्पोडेंट्स को नोटिस सम्मन आदिनांक तक तामील नहीं करवाये गये। अतः पत्रावली अदम हाजरी एवं अदम पैरवी में खारिज की जाती है। पत्रावली फैसल शुमार होकर बाद तामील तकमील दाखिल दफ्तर हो। (हस्ताक्षर) (दीप्ति रामचन्द्र मीना) भू-प्रबन्ध अधिकारी एवं पदेन राजस्व अपील प्राधिकारी कोटा	भू-प्रबन्ध अधिकारी एवं पदेन राजस्व अपील प्राधिकारी ★ कोटा ★

न्यायालय– भू–प्रबधंक एंव पदेन राजस्व अपील प्राधिकारी महोदय, कोटा कैम्प झालावाड़ राज0

सुमित पुत्र हंसराज उम्र 19 साल जाति धाकड़ निवासी डोबड़ा तहसील खानपुर जिला झालावाड़ राज0

.....अपीलार्थी

बनाम

1–दिलखुश पुत्री गिरिराज पत्नी सत्यनारायण जाति धाकड़ निवासी कुराड़िया कलॉ तहसील सांगोद जिला कोटा राज0
2–मीना पुत्री गिरिराज पत्नी महावीर जाति धाकड़ निवासी फालाहेड़ा तहसील कनवास जिला कोटा राज0
3–सन्जु पुत्री गिरिराज पत्नी महावीर नागर जाति धाकड़ निवासी रावाराई तहसील छीपाबडौद जिला बांरा राज0
4–रामजानकीबाई पत्नी गिरिराज जाति धाकड़ निवासी कृर्षि उपज मण्डी के सामने बांरा रोड़ खानपुर जिला झालावाड़ राज0
5–राजस्थान सरकार जर्ये तहसीलदार तहसील खानपुर जिला झालावाड़ राज0

.....रेस्पोडेन्ट

अपील बनाराजगी निर्णय व आदेश दिनांक 07.05.25 न्यायालय उपखण्ड अधिकारी महोदय, उपखण्ड खानपुर मिसल नं0 720/प्रार्थना पत्र/2024 ब–उनवान सुमित बनाम दिलखुश वगै0

मान्यवर,

प्रार्थी/अपीलार्थी निम्न निवेदन करता है, कि–

1–यह कि वाके ग्राम सूमर तहसील खानपुर जिला झालावाड़ राज0 में प्रार्थी के कब्जे काश्त एंव खाते की आराजी खाता संख्या नया 112 व पूराना 120 की खसरा नं0 837 की रकबा 4.0496 है0 स्थित है।

सुमित

2–यह कि प्रार्थी काश्तकार व्यक्ति है, अपने बाप दादाओ के जमाने से कृर्षि कार्य कर अपना व अपने परिवाद का पेट पालन करता आया है। कृर्षि कार्य ही आजीविका का मुख्य साधन है।

3–यह कि प्रार्थी के उक्त प्रार्थना पत्र की मद नं0 1 में वर्णित आराजी पर आने जाने का रास्ता राजस्व रेकार्ड में दर्ज नही है। इस समय से पूर्व करीब करीब सभी काश्तकारो की आराजी भूमि खुली रहती थी, उस पर किसी भी प्रकार का

.....निर 2 पर